



P-ISSN: 2706-7483
E-ISSN: 2706-7491
NAAS Rating: 4.5
IJGGE 2025; 7(5): 06-09
www.geojournal.net
Received: 10-03-2025
Accepted: 15-04-2025

डॉ. पी एल पटेल

प्राचार्य, बटमूल आश्रम महाविद्यालय,
सालहेओना, महापल्ली जिला-रायगढ़,
छत्तीसगढ़, भारत

‘गुरुत्वाकर्षण’ मृग मरीचिका के रूप में: एक भौगोलिक विश्लेषण

पी एल पटेल

DOI: <https://www.doi.org/10.22271/27067483.2025.v7.i5a.363>

सारांश

यह शोध पत्र प्रकृति में संचालित विविध भौतिक क्रियाओं की भ्रामकता के परिणामस्वरूप उत्पन्न समस्याओं के निदान हेतु प्रस्तुत है। शोधानुसार समस्याओं का निराकरण हो या ना हो अपितु वैज्ञानिक दृष्टिकोण में आधुनिकता, बदलाव और गति विकसित होकर एक नवीन परिदृश्य का आविर्भाव सुनिश्चित है।

कूटशब्द: धराग्र, धरास्त, परम्परमाणु

प्रस्तावना

आज विकसित तकनीक ने पृथ्वी और सौर परिवार के साथ – साथ ब्रह्मांड की जानकारी और उसके दूरी को जहां एक ओर संकुचित या सीमित कर रहा है, वहीं दूसरी ओर मनुष्य के कार्य क्षेत्र को अत्यधिक व्यापक एवं विस्तृत भी कर रहा है। विज्ञान और शिक्षा जगत से जुड़े विद्वान वैश्विक विकास से संबंधित विषय-वस्तुओं के अध्ययन से ज्यादा ध्यान खगोलीय एवं ब्रह्मांडीय रहस्यों को जानने में केन्द्रित कर रहे हैं। कहीं अंतरिक्ष स्टेशन, अंतरिक्ष होटल एवं अंतरिक्ष गांव बसाने की योजना चल रही है तो कहीं चन्द्रमा, मंगल एवं वृहस्पति में बसने की तैयारी हो रही है। ऐसे-ऐसे अविश्वसनीय कार्य कुछ सफल हो रहे हैं तो कुछ विफल भी हो रहे हैं। विफल योजनाओं एवं कार्यों से नयी – नयी सिख एवं अनसुलझे रहस्यों की जानकारी और पुष्टि के साथ-साथ नवीन कार्यों को प्रेरणा भी मिल रही है। आज के नवीन शोध या अनुसंधान कार्यों से ग्रहों – उपग्रहों से संबंधित प्राचीन मान्यताएं जैसे – ब्रह्मांड का केंद्र पृथ्वी को माना जाना, पृथ्वी का स्थिर और सूर्य का गतिशील होना, चंद्रमा के सतह पर वायुमंडल ना होना, सौर परिवार में केवल पृथ्वी पर ही जीवन के अनुकूल वातावरण होने का भ्रम इत्यादि खण्डित होने लगे हैं। तब ऐसी परिस्थिति में प्राचीनकाल से चली आ रही गुरुत्वाकर्षण की मान्यता अथवा सिद्धांत को मृग मरीचिका के रूप में देखना-समझना या उस पर विचार करना बेहद प्रासंगिक हो जाता है।

शोध का उद्देश्य

पूरी दुनिया आज गुरुत्वाकर्षण को पृथ्वी, सौरमंडल एवं ब्रह्मांड का संचालक मान रहा है। अर्थात् यह माना जा रहा है कि ब्रह्मांड और सौरमंडल के साथ-साथ इस पृथ्वी का संचालन कार्य या क्रिया गुरुत्वाकर्षण के कारण ही हो रहा है। अपितु वास्तव में संचालन का मूलधार गुरुत्वाकर्षण ही है या फिर यह भी मृग मरीचिका की भांति कोई भ्रम या धोखा है। इसका पता करना ही इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।

शोध के अध्ययन क्षेत्र

इस शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत एवं व्यापक है। शोध का विषय वस्तु गुरुत्वाकर्षण है इसलिए गुरुत्वाकर्षण की क्रिया संचालित होने वाले क्षेत्र पृथ्वी एवं सौरमंडल इसका अध्ययन क्षेत्र है।

गुरुत्वाकर्षण का उल्लेख मुख्यतः तीन कार्यों के संचालन के लिए किया जाता है –

1. पृथ्वी के सतह से उछाले या फेंके गए पदार्थों के नीचे गिरने के कारण के लिए।
2. पृथ्वी के सतह पर ज्वार –भाटा आने या बनने के लिए।
3. सौर मंडल में इतने बड़े-बड़े ग्रहों-उपग्रहों के अपने ही स्थान पर टिककर या रहकर परिक्रमा करने के लिए। अतः उपरोक्त तीनों क्षेत्र शोध के अध्ययन क्षेत्र हैं या अध्ययन क्षेत्र माना गया है।

Corresponding Author:

डॉ. पी एल पटेल

प्राचार्य, बटमूल आश्रम महाविद्यालय,
सालहेओना, महापल्ली जिला-रायगढ़,
छत्तीसगढ़, भारत

शोध कार्य के विधितंत्र

इस शोध कार्य को एक विश्लेषणात्मक कार्य के रूप में किया गया है। जो प्रकृति में प्रचलित या संचालित प्रक्रियाओं या सिद्धांतों की मान्यताओं पर आधारित है। इस शोध के संख्यात्मक एवं तथ्यात्मक जानकारी संदर्भित ग्रंथों या पुस्तकों से संग्रहित है। इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग प्रत्यक्ष नहीं हुआ है। यह पूर्णतः एक विश्लेषणात्मक कार्य है।

शोध संबंधी पूर्व अध्ययन या शोध का इतिहास

मरीचिका एक तरह से धोखा या भ्रम का ही नाम है। जो मनुष्य को ही नहीं अपितु सभी चिंतनशील प्राणियों को होता है। यह मूलतः एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। वास्तव में जब कोई व्यक्ति या प्राणी किसी वस्तु या उसके क्रिया को देखता है और उसे देखने पर जैसा लगता या दिखता है, वैसा ही उसका मूल या वास्तविक स्वरूप नहीं रहता या होता है तो वह व्यक्ति या प्राणी अपने आपको उससे धोखा या ठगा महसूस करने लगता है। जब हिरण या मृग रेगिस्तान में प्रकाश के पूर्ण आंतरिक परावर्तन और वायुमंडलीय अपवर्तन वाली चिलमिलाती धूप को देखता है तो दूर से उसे पानी लगता है और प्यास बुझाने के लिए उस ओर दौड़ पड़ता है परन्तु उसे धोखा मिलता है। और अंततः मृग को प्यासा ही रहना पड़ता है या दौड़ लगाते-लगाते प्यासा ही मर जाता है। जब मृग को पानी होने का धोखा मिला तो इस प्रसंग को मृग मरीचिका कह दिया गया। इसी तरह प्रकृति में अनेकों जगह अनेक रूपों में मरीचिका की क्रिया संचालित है। जैसे – किसानों की किसानी, जादूगर की जादूगरी, जुआरियों की जुआ और यहां तक कि जीवन की अच्छी-बुरी परिस्थिति भी एक मरीचिका ही है।

‘पर्यावरण’ या इस संसार में अनगिनत मरीचिकाएं विद्यमान या संचालित हैं अपितु वैश्विक स्तर की प्रारंभिक तीन मरीचिकाएं निम्नलिखित हैं –

1. सूर्योदय होना।
2. पृथ्वी का गोलाकार होना।
3. पृथ्वी का अस्थिर होना।

उपर्युक्त तीनों भौगोलिक क्रियाएं मृग मरीचिका की भांति आदिकाल से संचालित हैं और अनंत काल तक रहेंगी। विश्व की प्रथम प्राकृतिक मरीचिका सूर्योदय है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सूर्य स्थिर और पृथ्वी गतिशील है। कहीं भी स्थिर वस्तु का उदय होना संभव ही नहीं है। फिर भी सूर्योदय कहा या माना जा रहा है और स्पष्टतः दैनिक जीवन में सूर्य उदय होते हुए प्रत्येक व्यक्ति को लग भी रहा है। इसलिए सूर्योदय कहना या मानना एक मरीचिका है। क्योंकि सूर्य स्थिर होकर भी उदय और अस्त होते हुए दिखाई दे रहा है। जानकारी की कमी या अपूर्णता के कारण सूर्योदय और सूर्यास्त कह दिया गया नहीं तो धरा अर्थात् पृथ्वी के जो भाग या हिस्सा सूर्य के सामने पहुंचता है या जहां से सूर्य पहले दिखाई देता है वहां को वास्तव में सूर्योदय के स्थान पर ‘धराग्र’ और जहां सबसे अंत तक दिखाई देता है वहां को सूर्यास्त के स्थान पर ‘धरास्त’ कहा जाता तो भावात्मक सुधार होकर वास्तविक प्रक्रिया का आभास धीरे-धीरे होता और अंततः भ्रामक सुधार हो जाता। इसी तरह पृथ्वी के आकार को गोलाकार माना गया है अपितु पृथ्वी पर रहने या चलने वालों को इसकी विशालता के कारण गोलाकार होने की अनुभूति कभी भी नहीं हो रही है। हमेशा समतल सपाट मैदान के रूप में दिखाई दे रहा है। इसलिए पृथ्वी का गोलाकार स्वरूप भी एक मरीचिका ही है। ऐसी ही स्थिति पृथ्वी की गतिशीलता में भी है। सभी को पृथ्वी स्थिर और सूर्य गतिशील दिखाई दे रहा है। जो एक तरह की मरीचिका ही है। यहां पर सूर्योदय, पृथ्वी के गोलाकार स्वरूप एवं पृथ्वी की गतिशीलता का मरीचिकीय रूप में दिखाई देने का मूल कारण सूर्य, पृथ्वी और मनुष्य के बीच आकर एवं दूरी के अनुपात

या सापेक्षता अर्थात् ‘तमसंजपअपजल’ है। सूर्य और पृथ्वी के समक्ष मनुष्य और मनुष्य की दृष्टि क्षमता अनुपातिक रूप में परमाणु से भी बहुत छोटे अर्थात् परम्परमाणु है। यदि अनुपातिक या सापेक्षिक रूप में मनुष्य और मनुष्य की दृष्टि क्षमता, पृथ्वी और सूर्य के आकार और दूरी के बराबर होते तो उक्त भ्रमित क्रियाएं या मरीचिका होते ही नहीं।

सापेक्षता या रिलेटिविटी का सिद्धांत केवल एक वैज्ञानिक सिद्धांत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण कार्यों के अर्थात् सृष्टि के संचालन का मूलाधार है। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस सृष्टि और सृष्टि के सम्पूर्ण कार्यों का संचालन रिलेटिविटी से ही हो रहा है। सापेक्षिक, रिलेटिविटी या अनुपातिक प्रक्रिया में दो या दो से अधिक वस्तु या तथ्य या पक्ष का होना आवश्यक होता है। जिनके मध्य गणना या संबंध या स्वरूप सुनिश्चित होते हैं। जैसे— पृथ्वी पर नदी और नदी के विविध स्थलाकृति का संचालन नदी के उद्गम और मुहाने की सागर तल से ऊंचाई के अनुपात पर, पवन संचालन वायुदाब के अधिकतम और न्यूनतम के अनुपात पर, वनस्पति का उत्पादन एवं विकास जलवायु की सापेक्षता पर, ऐसी ही किसी दो पहिए इक्का गाड़ी या कोई गोलाकार वस्तु के संचालन में चलने या घुमने की दिशा एवं गति का निर्धारण दोनों पहिए की त्रिज्या की लम्बाई और ध्रुवों के बनावट की समानता या एकरूपता के अनुपात पर होता है। किसी वस्तु या पदार्थ के विविध रंग, रूप, भार एवं स्वाद का निर्माण भी उसमें उपस्थित तत्वों के मिश्रण के अनुपात पर निर्भर होता है।

इस तरह स्पष्ट कहा जा सकता है कि किसी पदार्थ या वस्तु के कार्य या क्रिया पर प्रभाव, उस वस्तु या पदार्थ को प्रभावित या सक्रिय करने वाले कारक की सक्रियता और रिलेटिविटी से पड़ता है।

शोध की मूल बातें

इस शोध की मूल बात यह है कि आज पूरा विश्व जिस क्रिया या कार्य को GRAVITATION अर्थात् गुरुत्वाकर्षण कह या मान रहा है वह क्रिया या कार्य वास्तव में आकर्षण ही है या फिर धोखे से कुछ दूसरे कार्य या क्रिया को शब्दार्थ के अनुरूप गुरुत्वाकर्षण मान लिया जा रहा है। जैसा कि – सूर्य के उदय होने को सूर्योदय तो कहा जाता है परन्तु सूर्योदय कभी हो नहीं रहा है केवल आभास हो रहा है कि सूर्य का उदय हो रहा है। इसी तरह गुरुत्वाकर्षण शाब्दिक रूप से तीन शब्द गुरु + तत्व + आकर्षण से मिलकर बना है। जिसका शब्दार्थ गुरु=भारी, तत्व = पदार्थ और आकर्षण = खिंचाव होता है। इस प्रकार गुरुत्वाकर्षण का शब्दार्थ किसी वस्तु का भारी पदार्थ की ओर खिंचाना या आकर्षित होना है। अपितु पृथ्वी के सतह पर किसी पदार्थ को फेंकने या उछालने पर पदार्थ वहीं या सतह पर गिर जाता है तो इस गिरने की क्रिया को धोखे से सूर्योदय की भांति गुरुत्वाकर्षण कहा जा रहा है नहीं तो किसी भी पदार्थ के ऊपर से नीचे गिरने का मूल कारण आकर्षण या खिंचाव नहीं अपितु फेंके या उछाले गए पदार्थ को प्रभावित या नियंत्रित करने वाले कारक हैं।

इस पृथ्वी पर लोहा ही एक ऐसा तत्व है जो चुम्बकीय तत्व के रूप में हमेशा नीचे या केन्द्र में रहता है। गुरु तत्व अर्थात् भारी तत्व लोहा के चुम्बकीय कार्य को खुली आंख से प्रयोग के माध्यम से आकर्षित होते हुए स्पष्ट देखा जाता है। आकर्षित या खिंचाने का यही भाव गुरुत्वाकर्षण के रूप में सूर्योदय की भांति मन मस्तिष्क में बैठ या छप गया है। अन्यथा पृथ्वी के सतह से फेंके गए पदार्थ को प्रभावित करने वाले तत्वों के आकार, गुण, अनुपात और उनकी उपस्थिति से ही पदार्थ के नीचे गिरने या ना गिरने की क्रिया सुनिश्चित होता है। किसी फेंके गए या उछाले गए पदार्थ को कोई भी अन्य तत्व किसी भी रूप में प्रभावित ना करे

या प्रभावित करने के लिए उपस्थित ना रहे अर्थात् ट।ब्लंड (निर्वात) हो तो वहां पर पदार्थ वापस नहीं गिरेगा। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सतह से ऊपर की ओर फेंके या उछाले गए पदार्थ की गति प्रति सेकंड 11. 2 किलोमीटर पृथ्वी पर और 2.4 किलोमीटर की गति चंद्रमा पर हो तो पदार्थ या वस्तु वापस नहीं गिरता या वापस नहीं होता है। वह सतत् उसी गति में तब तक आगे बढ़ता ही रहता है जब तक की उसके सामने अनुपातिक रूप में कोई बड़ा तत्व बाधा के रूप में सामने ना आ जाता हो जैसे – उल्कापिंडों के आगे बढ़ने की गति ग्रह – उपग्रह के सामने आने पर समाप्त हो जाती है। पृथ्वी और चंद्रमा के सतह से निकले पदार्थों की प्रति सेकंड 11.2 और 2.4 किलोमीटर की गति को पृथ्वी और चंद्रमा की टमसवबपजल कहा गया है। चंद्रमा और पृथ्वी के वेलोसिटी में इतना अधिक अंतर का प्रमुख कारण दोनों के ब्यास, क्षेत्रफल, आयतन एवं द्रव्यमान में अंतर है। पृथ्वी, चंद्रमा से ब्यास में 04 गुना, क्षेत्रफल में 13 गुना, आयतन में 46 गुना और द्रव्यमान में 81 गुना बड़ी है इसलिए उसका वायुमंडल भी बड़ा है और चंद्रमा का बहुत छोटा। किसी पदार्थ को पृथ्वी के सतह से बाहर निकलने के लिए वायुमंडल के वायु को हटा कर या वायुदाब से टकराकर आगे बढ़ना पड़ता है। अतः बड़े वायुमंडल के लिए अधिक समय तक अधिक शक्ति या गति और छोटे वायुमंडल में कम समय तक, कम गति या शक्ति की आवश्यकता पड़ेगी। यहां पृथ्वी की ही नहीं वरन् सभी ग्रहों के वायुमंडल या घूर्णनशील पदार्थ के नीचली सतह पर ऊपरी सतह का भार पड़ता है। जिसे वायुदाब या भार कहा जाता है। जो पृथ्वी के सतह पर 2.7 किलोग्राम प्रतिवर्ग सेंटीमीटर है। यह वायुदाब ऊपर की ओर क्रमशः घटते जाता है, परन्तु घटने का यह दर समान नहीं है। हजारों किलोमीटर से अधिक मोटाई वाले पृथ्वी के वायुमंडल में सतह से मात्र 5 किलोमीटर की ऊंचाई पर घटकर 50: हो जाता है। जिसका प्रमुख कारण वायुमंडल के ऊपरी परतों में हल्की गैसों की उपस्थिति और वायुमंडल की मोटाई का निरंतर कम होना है।

गुरुत्वाकर्षण को मरीचिका मानने का मूल कारण

उपरोक्त विवरणानुसार गुरुत्वाकर्षण को मरीचिका मानने का मूलभूत कारण निम्नलिखित हैं

1. पृथ्वी के सतह पर फेंके या उछाले गए पदार्थ के ऊपर से नीचे गिरने का मूल कारण आकर्षण अर्थात् गुरुत्वाकर्षण को ही माना जा रहा है। जबकि पदार्थ के किसी भी रूप – ठोस, तरल या गैस को ऊपर उछालने या फेंकने पर, वायुमंडल की उपस्थिति, पदार्थ के घनत्व या भार, और फेंकने या उछालने की गति से ही पदार्थ का नीचे गिरना या ना गिरना सुनिश्चित होता है ना कि आकर्षण से। किसी वायुमंडलीय क्षेत्र में कम गति से अधिक भार वाले किसी भी पदार्थ को ऊपर उछालने या फेंकने पर पदार्थ गिरता है परन्तु वायुविहीन क्षेत्र अर्थात् VACUUM में उसी पदार्थ को उतनी ही गति से या उससे कम गति के साथ उछालने या ऊपर फेंकने पर नहीं गिरेगा। ऐसी ही कम भार वाले तत्व हाइड्रोजन एवं हिलियम को अधिक भार वाले तत्व नाइट्रोजन एवं ऑक्सीजन के साथ रखने पर ऊपर चला जाता है नीचे आता ही नहीं या नीचे रह ही नहीं पाता है। इन्ही सब बातों के कारण आकर्षण या गुरुत्वाकर्षण को किसी पदार्थ के नीचे गिरने का कारण ना मानकर इसे एक मरीचिका या धोखा कहा या माना जा रहा है। यहां पर वायुमंडल की अदृश्यता धोखा का सबसे बड़ा कारण है। वायुमंडल में उपस्थित गैसों के परमाणु सदृश्य होते तो पदार्थ को प्रभावित करते हुए स्पष्ट दिखाई देता और आकर्षण का भाव जागृत ही नहीं होता।
2. पृथ्वी के सतह पर ज्वार-भाटा बनने या आने का मूल कारण गुरुत्वाकर्षण को माना जा रहा है। जबकि मूल कारण

महासागरीय नितल का उच्चावच होना है। यदि पृथ्वी के महासागरों के नितल, ऊबड़-खाबड़ या उच्चावचीय स्वरूप वाला ना होकर पूर्णतः गोलाकार किसी छर्रे की भांति होता तो पृथ्वी के बाह्य सतह में महासागरों की गहराई सभी जगह समान होता और पृथ्वी के घूर्णन से जल-तल में हल-चल जैसी क्रिया अर्थात् ज्वार-भाटा की क्रिया उत्पन्न ही नहीं होता। इसलिए ज्वार-भाटा बनने के कारण को गुरुत्वाकर्षण मानना या कहना भी एक तरह की मरीचिका है।

3. ब्रह्मांड या सौर परिवार में ग्रह-उपग्रह या तारा – नक्षत्र के अपने ही कक्ष में रहकर परिक्रमा करने के मूल कारण गुरुत्वाकर्षण को माना जा रहा है। जबकि कोई भी पदार्थ या भौगोलिक पिंड घूर्णन की स्थिति में दोनों गोलाद्धों पर बने ध्रुवों के बनावट की एकरूपता या समानता के अनुरूप ही अपना परिक्रमण कक्ष सुनिश्चित करके परिक्रमा करता है। यदि पिंड का ध्रुव या ध्रुवीय क्षेत्र पूर्ण वृत्ताकार या गोलाकार होता है तो वहां पर ध्रुवीय झुकाव 0° डिग्री और यदि पूर्ण वृत्ताकार या गोलाकार ना होकर खण्डित होता है तो खण्डित भाग के अनुपातानुसार झुककर अपना परिक्रमण कक्ष बनाते हुए परिक्रमा करेगा। और यही स्थिति पृथ्वी की भी है। इसलिए भौगोलिक पिंडों का परिक्रमण कक्ष पर ही परिक्रमा करना गुरुत्वाकर्षण से सुनिश्चित होता है कहना या मानना भी एक मरीचिका है। अंतरिक्ष एवं सौरमंडल में उपस्थित समस्त भौगोलिक एवं खगोलीय पिंडों की स्थिति और उपस्थिति को कैरम, गोल्फ, क्रिकेट एवं मौत कुंआ प्रदर्शन के उदाहरण द्वारा बहुत ही अच्छे ढंग से समझा जा सकता है।

इस प्रकार उपरोक्त सभी कारणों को प्रायोगिक रूप में लेकर या वर्कशॉप के माध्यम से देखने, समझने और मानने पर स्पष्ट होता है कि गुरुत्वाकर्षण का स्वरूप ठीक वैसा ही भ्रामक या धोखेदार है जैसा मृग मरीचिका है। अर्थात् गुरुत्वाकर्षण जैसा दिख रहा है, जैसा लग रहा है ठीक वैसा ही नहीं है।

शोध का महत्व या लाभ

इस शोध कार्य का महत्व प्रत्यक्ष रूप से मनुष्य के दैनिक जीवन-यापन या दैनिक जीवन के क्रिया-कलापों के लिए बहुत ही कम या नगण्य है और वैज्ञानिक क्षेत्र या वैज्ञानिक क्रिया-कलापों के लिए अत्यधिक महत्व का है। अर्थात् गुरुत्वाकर्षण को मरीचिका मानने या ना मानने से मनुष्य के दैनिक जीवन-यापन में किसी तरह का कोई विशेष लाभ या सुधार या बदलाव आएगा या होगा ऐसा बिल्कुल नहीं है, अपितु वैज्ञानिक जगत के लिए गुरुत्वाकर्षण के मरीचिकीय स्वरूप के स्पष्टीकरण होने से बहुत-बहुत ज्यादा बदलाव या सुधार या विकास निश्चित ही होगा या आएगा। और वही विकास, सुधार या बदलाव ही शोध का लाभ या महत्व है या होगा, जो निम्नलिखित है :-

1. अंतरिक्ष एवं खगोल संबंधी ज्ञान में व्याप्त वृद्धि होगी।
2. गुरुत्वाकर्षण शक्ति के भ्रम समाप्त हो जाने से नये-नये अनुसंधान कार्य विकसित होंगे।
3. यह शोध अंतरिक्ष में स्टेशन, होटल, एवं गांव बसाने में सहायक सिद्ध होगा।
4. इस शोध से महान जर्मन दार्शनिक इमैनुएल काण्ट के कथन कि “तुम मुझे पदार्थ दो मैं पृथ्वी का निर्माण करके दिखला दूंगा।” को आगे बढ़ाकर अंतरिक्ष में एक नहीं बल्कि आवश्यकतानुरूप छोटे-बड़े अनगिनत पृथ्वी निर्माण करने में सहायता मिलेगी।
5. इससे अंतरिक्ष में गांव की बसावट को प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन मिलने के साथ-साथ अंतरिक्ष नगरीकरण का शुभारंभ होगा।

6. गुरुत्वाकर्षण के भ्रम की स्पष्टीकरण से पृथ्वी की पर्यावरणीय अव्यवस्था में सुधार के साथ पृथ्वी की आयु बढ़ेगी।
7. पृथ्वी की आयु वृद्धि से मानव को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण प्राणी जगत को लाभ मिलेगा। जिससे चिंतन या विचार के मूल उद्देश्यों की शतप्रतिशत प्राप्ति होगी।

निष्कर्ष

अंततः उपरोक्त विवरणों के अनुसार निष्कर्ष के रूप में स्पष्ट कहा जा सकता है कि गुरुत्वाकर्षण की क्रिया सूर्योदय की भांति एक भ्रामक क्रिया है, जो होते हुए तो दिखाई दे रहा है अपितु क्रिया अथवा कार्य के होने का मूल कारण वही नहीं जिसे माना या समझा जा रहा है। गुरुत्वाकर्षण के शब्दार्थ और क्रियात्मक रूप अर्थात् भावार्थ के संयोग के परिणाम स्वरूप ही यह भ्रामक कार्य संपादित हो रहा है। गुरुत्वाकर्षण के इस मरीचिकीय या भ्रामक स्वरूप के कारण अनेकानेक अन्वेषणात्मक कार्य विफल हो रहे हैं जैसे – चंद्रयान-2 का लैंडिंग पूर्व डैमेज होना, इजराइली मून रोवर मिशन का क्रैश होना, कल्पना चावला के अंतरिक्ष यान का क्रैश होना इत्यादि। ऐसी विफलताओं का संबंध प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से गुरुत्वाकर्षण की क्रिया से जुड़े होने के कारण भविष्य की और अन्य विफलताओं से बचने और नवीन अनुसंधानात्मक कार्यों की सफलताओं के लिए गुरुत्वाकर्षण के मरीचिकीय स्वरूप के स्पष्टीकरण पर अधिकाधिक कॉन्फ्रेंस, सेमिनार, वर्कशॉप एवं स्कूल आयोजित कर स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि जिस कार्य या क्रिया को हम गुरुत्वाकर्षण या आकर्षण मान रहे हैं वह आकर्षण या गुरुत्वाकर्षण नहीं बल्कि अन्य कारकों के सामूहिक क्रियाओं का परिणाम है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. डी पी गर्ग (1997) पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण, नारायण प्रकाशन, इंदौर।
2. डॉ. बी. पी. पांडा (1989) जनसंख्या भूगोल, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
3. डॉ. सविंद्र सिंह (2001) पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
4. डॉ. प्रमिला कुमार एवं डॉक्टर कमल शर्मा (2000) कृषि भूगोल, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
5. डॉ. जगदीश सिंह (2000) संसाधन भूगोल, ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर।
6. डॉ. चतुर्भुज मामोरिया (2000) भारत का भूगोल, साहित्य भवन पब्लिकेशंस, आगरा।
7. डॉ. एस. बी. अग्रवाल (2000) वनस्पति विज्ञान, शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी, इंदौर।
8. डॉ. जे. एन. पाण्डे एवं डॉ. एस. आर. कमलेश (1998) कृषि भूगोल, वसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर।
9. कक्षा ग्यारहवीं, भौतिकी बुक, एन.सी.ई.आर.टी.।
10. विकीपीडिया एवं गूगल सर्च इंजन।